ब्रह्मा कुमरीज़ के अव्यक्त वाणी साहित्य में प्रश्नवाचक वाक्यों द्वारा आध्यात्मिक सशक्तिकरण

(डॉ0 हरदीप सिंह , प्रोफैसर हिंदी , शोध केंद्र और परा स्नातक हिंदी विभाग , सतीशचन्द्र धवन सरकारी कॉलेज, लुधियाना , मोबाइल - 09417717910)

प्रस्तुत शोध पत्र में इस बात का परीक्षण किया गया है की प्रश्न वाचक वाक्यों के प्रयोग द्वारा किसी भी प्रकार के परिवर्तन के लिए मानव प्रेरित और तत्पर हो जाता है | यह शोध पत्र ब्रह्मा कुमरीज़ के अव्यक्त वाणी साहित्य पर आधारित है जिसमें व्यक्ति को अपने मौलिक गुणों (सुख, शांति, प्रेम, आनंद, शक्ति, ज्ञान और सत्यता) में स्थित होने के लिए कैसे भी मुश्किल परिवर्तन लो लाने के लिए प्रेरणा पैदा हो जाती है | इस पत्र द्वारा यह स्थापित किया गया है कि जब शुभ भावना, शुभ कामना और दिल के निःस्वार्थ स्नेह द्वारा प्रश्नवाचक शैली में कोई बात कही जाती है तो वह अचूक असर करती है | इस शोध पत्र में 1975 में प्रकाशित 68 वाणियों में से केवल 6 अव्यक्त वाणियों को शामिल किया गया है और यही इसकी सीमा भी है | ये वाणियाँ परमात्मा का आत्माओं के साथ संवाद है | इस संवाद में प्रयुक्त प्रश्नवाचक वाक्यों के माध्यम से व्यक्ति का आध्यात्मिक सशक्तिकरण होता है इस बात को प्रस्तुत शोध पत्र में स्थापित किया गया है | वर्तमान विश्वशांति के संकट, और सम्बन्धों में तनाव को सुलझाने में आत्मिक स्थिति में स्थित होने में इससे सहायता मिलेगी | यह इस शोध पत्र का समाज और विश्व के लिए योगदान है | इस लिए यह शोध पत्र मनोविज्ञान , समाजशात्र, मानव शास्त्र और अन्य विषयों से सम्बन्धित होने के कारण अंतर्विषयक प्रकृति का है |

शोध पत्र का विषय

अव्यक्त वाणियाँ प्रश्नवाचक शैली द्वारा व्यक्ति की सहजात आंतरिक शक्तियों को कर्म में लाकर मानव को अपने व्यक्तित्व के सर्व श्रेष्ठ बिंदु तक पहुंचाती हैं | 21वीं सदी की सूचना और प्रौद्योगिकी की क्रांति से आज का व्यक्ति बौखला सा गया है | फेसबुक की 'लाइकिंग' और व्हाट्सएप की 'चैटिंग' के जाल में उलझ कर व्यक्ति 'आइडेंटिटी क्राइसिस' के महारोग से त्रस्त है | जैसे रामायण की कथा में रावण ने सीता जी का अपहरण करके उसे अपनी क़ैद में रख लिया था वैसे ही भौतिकतावादी रावण ने आज के मानव को मानव से उपभोक्ता मात्र बना दिया है | भौतिक तरक्की के शिखर तक पहुँचने के लिए व्यक्ति अपने मूल्यों की हत्या करके उनके शवों को

सीड़ियाँ बना कर अपनी अंतरात्मा का गला घोंट कर रातों रात धनाड्य बन जाना चाहता है | इसके लिए उसने दांव पर लगाया है अपने सहजात गुणों को, अपनी शांति, अपनी ख़ुशी, अपने आनंद, अपनी शक्ति और अपनी पवित्रता को | अव्यक्त वाणियाँ माया की बेहोशी और मदहोशी से सुरजीत करती हैं और इसके लिए इन वाणियों में जिस प्रश्नवाचक शैली का प्रयोग किया गया है वह बहुत शक्तिशाली है और व्यक्ति की अंतरात्मा को झकझोर कर जागृत करने वाला है | इन प्रश्नों की शैली व्यक्ति को आत्माभिमानी बना कर स्वमान में स्थित तो करती है कैसे भी विघ्नों का और कैसी भी विकराल परिस्थितियों का सामना करने के लिए व्यक्ति को सक्षम बनाती हैं | यही आध्यात्मिक सशक्तिकरण है| इन सवालों की एक अन्य बड़ी विशेषता यह है कि यह सवाल सीधे सीधे हृदय में उतर जाते हैं | एक अटूट सम्बन्ध (कनेक्टिविटी) जुट जाता है | प्रस्तुत शोध पत्र मे प्रश्नवाचक शैली पर निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से विचार किया गया है :

“अपने को अशरीरी आत्मा अनुभव करते हो? इस शरीर द्वारा जो चाहे वही कर्म कराने वाली तुम शक्तिशाली आत्मा हो , ऐसा अनुभव करते हो ? इस शरीर के मालिक कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाले इन कर्मेन्द्रियों से जब चाहो तब न्यारे स्वरूप की स्थिति में स्थित हो सकते हो ? अर्थात् राजयोग की सिद्धि कर्मेन्द्रियों का राजा बनने की शक्ति प्राप्त की है ?” (1)

इन प्रश्नों से यह स्पष्ट होता है कि जो व्यक्ति अपनी कर्मेन्द्रियों का राजा अथवा मालिक है वह कभी भी किसी कर्मेन्द्रि के वशीभूत नहीं हो सकता |वशीभूत होने वाले को मालिक नहीं कहा जा सकता | दुनिया भर में होने वाले दुःख देने वाले कार्य वही लोग करते हैं जो कर्मेन्द्रियों के वशीभूत होते हैं | विश्व को दुःख व अशांति से मुक्त करने के लिए अपनी कर्मेन्द्रियों का राजा बनना आवश्यक है | इसके लिए स्वयं के आत्मिक रूप में सहज भाव से स्थित होना आवश्यक है |

“ निराकारी ,आकारी और साकारी इन तीनों स्टेजिस को समान बनाया है ? जितना साकारी स्वरूप में स्थित होना सहज अनुभव करते हो उतना ही आकारी स्वरूप अर्थात अपनी सम्पूर्ण स्टेज व अपने अनादि स्वरूप - निराकारी स्टेज - में स्थित होना सहज अनुभव होता है ? साकारी स्वरूप आदि स्वरूप है , निराकारी अनादि स्वरूप है | तो आदि स्वरूप सहज लगता है या अनादि स्वरूप में स्थित होना सहज लगता है ? वह अविनाशी स्वरूप है और साकारी स्वरूप परिवर्तन होने वाला स्वरूप है, तो सहज कौन सा होना चाहिए ? साकारी स्वरूप की स्मृति स्वतः रहती है या निराकारी स्वरूप की स्मृति स्वतः रहती है ? या स्मृति लानी पड़ती है ? मै जो हूँ

जैसा हूँ उसको स्मृति में लाने की क्या आवश्यकता है ? अब तक भी स्मृति स्वरूप नहीं बने हो ?" (2)

उपर्युक्त उदाहरण में तीन अवस्थाओं की बात कही है; एक, निराकारी, दूसरी आकारी और तीसरी अवस्था है साकारी | साकारी अवस्था का भाव है अपने शारीरिक भान में रहना | इसे ही देह अभिमान कहते हैं | इस शारीरिक भान का के अनेक रूप होते हैं | पहला रूप है कि मैं पुरुष हूँ या महिला हूँ या अन्य हूँ| यह देह के साकारी रूप का भान है | इस भान के आधार पर ही मन में अनेक प्रकार की विकृतियाँ आ जाती हैं | शारीरिक भान का दूसरा रूप धर्म है | जिस धर्म में व्यक्ति का जन्म होता है वह अपने को उस धर्म के आधार पर हिन्दू, मुस्लिम, सिख , ईसाई आदि समझता है | शरीर के साकारी भान का अन्य रूप नस्ल, जाति , रंग, रूप, भाषा , देश आदि से भी जुड़ा रहता है | यह देह भान का साकारी रूप व्यक्ति को अनेक विकारों की जंजीरों में बांध कर रखता है | जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति अपने इस साकारी रूप को ही सत्य समझ कर जीता है | विश्व की वर्तमान सभी समस्याओं का मूल कारण ही यह साकारी रूप का भान है | उदाहरण में आगे कहा गया है कि 'साकारी स्वरूप आदि स्वरूप है' | इसका अर्थ यह है कि सृष्टि के आदि में आत्मा जब परमधाम से इस धरती पर आती है तो शरीर धारण करती है | वह उसका आदि रूप होता है | सृष्टि की आदि के समय को सतयुग कहते हैं | उस समय आत्मा सतोप्रधान शरीर धारण करती है | लेकिन स्मृति में आत्मिक स्वरूप, निराकारी स्वरूप, रहता है| इसी स्वरूप का गायन श्री लक्ष्मी और श्री नारायण के रूप में किया जाता है | धीरे धीरे पुनर्जन्म में आते आते आत्मा को अपने इस स्वरूप की विस्मृति हो जाती है और आत्मा अपने निराकारी स्वरूप को भूल कर साकारी देह अभिमान के स्वरूप में समझने लगती है | यही आज का 'आइडेंटिटी क्राइसिस' है | इसी कारण व्यक्ति आज नकारात्मक और व्यर्थ संकल्पों से ग्रसित है | इसी भूल के कारण आज भ्रष्टाचार, पापाचार, दुराचार और दुनियाभर का गड़बड़ घोटाला चल रहा है | आतंकवाद, साम्प्रदायिकता का उन्माद भी इसी वजह से है | 'साकारी स्वरूप परिवर्तन होने वाला स्वरूप है', साकारी स्वरूप में परिवर्तन सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग और कलियुग में निरंतर पांच हजार वर्ष में चक्रिक रूप में होता रहता है |

अब यहाँ प्रश्नवाचक शैली द्वारा सीधे सीधे परत दर परत संस्कारों की गहराई में हमारे अनादि स्वरूप के बोध को कुरेदा गया है :

"निराकारी ,आकारी और साकारी इन तीनों स्टेजिस को समान बनाया है ? जितना साकारी स्वरूप में स्थित होना सहज अनुभव करते हो उतना ही आकारी स्वरूप

अर्थात अपनी सम्पूर्ण स्टेज व अपने अनादि स्वरूप - निराकारी स्टेज - में स्थित होना सहज अनुभव होता है ?" (3)

यह प्रश्न सीधे सीधे व्यक्ति को यह सोचने के लिए विवश करते हैं कि वह अपने साकारी अर्थात् शारीरिक भान में कितने अंश तक जी रहा है और अपने निराकारी अर्थात् अनादि अविनाशी आत्मिक स्वरूप में कितना स्थित रहता है | अन्यथा अपनी नित्य क्रियाओं में मानव इतना खो गया है कि उसकी विचार शक्ति कुंद पड़ गई है | यह सवाल साकारी स्वरूप वाले देह अभिमान की गहरी जमी हुई परतों को उधेड़ने वाले हैं | यह परतें है- पुरुष और स्त्री भान की परत, देह के धर्मों की परत, नस्ल की परत, भाषा की परत, जाति की परत, समुदाय की परत, पद और प्रतिष्ठा की परत, आदि | इन परतों के कारण आत्मा का यथार्थ स्वरूप सामने नहीं आ पाता |

इस आत्मिक अनादि अविनाशी स्वरूप में सहज भाव से स्थित करने के लिए एक अव्यक्त वाणी प्रेरित और उद्‌बोधित करने वाले निम्नलिखित प्रश्न उठाती है -

" अशरीरी भव, यह वरदान प्राप्त कर लिया है ? जिस समय संकल्प करो कि 'मैं अशरीरी हूँ' उसी सेकंड स्वरूप बन जाओ | ऐसा अभ्यास सहज हो गया है ?" (4)

सदा इस आत्मिक स्वरूप का सहज अनुभव होना, यह व्यक्ति की सम्पूर्णता की परख है | कभी सहज , कभी मुश्किल, कभी सेकंड , कभी मिनट या उससे भी ज्यादा समय में अशरीरी स्वरूप का अनुभव करने का अर्थ है अपनी सम्पूर्णता की अवस्था से दूर होना है |

इन वाणियों का उद्‌देश्य व्यक्ति को अपने निजी अनादि स्वरूप में स्थित करना है | अपने साकारी स्वरूप अर्थात वर्तमान देह अभिमान के संस्कारों को परिवर्तन करने के लिए लगन की अग्नि चाहिए | इस विषय में अव्यक्त वाणी में सवाल उठाया गया है -

"अपनी लगन में अग्नि की महसूसता आती है ?"

आगे इस लगन की अग्नि के भाव को स्पष्ट किया गया है :

"जिस लगन की अग्नि में स्वयं के पास्ट के संस्कार और स्वभाव व अन्य आत्माओं के दुःखदाई संस्कार और स्वभाव को भस्म कर सको | ज्ञान द्‌वारा अथवा स्नेह व सम्पर्क द्‌वारा संस्कार परिवर्तित करते तो हो, लेकिन उसमें समय लगता है | मिटा

हुआ सा संस्कार फिर भी कब प्रत्यक्ष हो जाता है | लेकिन अब समय लगन की अग्नि में भस्म करने का है | जो फिर उस संस्कार का नामोनिशान भी न रहे |" (5)

कहीं कहीं सवाल उठा कर उसका उत्तर भी दिया गया है जिससे व्यक्ति को स्वयं को परिवर्तित कैसे करना है यह ज्ञान प्राप्त होता है :

" इस मुक्ति की युक्ति कौन सी है अर्थात् इस लगन की अग्नि को पैदा करने की युक्ति व तीली कौन सी है ? तीली से आग लगाते हो न ! तो इस अग्नि को प्रज्वलित करने की कौन सी तीली है ? एक संकल्प कौन सा है ? दृढ़ संकल्प अर्थात् मर जाएँगे , मिट जाएँगे लेकिन करना ही है | करना तो चाहिए, होना तो चाहिए, कर ही रहे हैं, हो ही जाएगा, अटेंशन तो रहता है और महसूस भी करते हैं - ऐसा सोचना एक प्रकार से बुझी हुई तीली है | बार बार मेहनत भी करते हो , समय भी लगाते हो , लेकिन अग्नि प्रज्वलित नहीं होती | कारण यह है कि संकल्प रुपी बीज दृढ़ता रुपी सार से सम्पन्न नहीं है अर्थात् खाली है | इस कारण जो फल की आशा रखते हो व भविष्य सोचते हो वह पूर्ण नहीं हो पाता | और चलते चलते मेहनत ज्यादा और प्राप्ति कम देखते हो तो दिलशिकस्त और अलबेले हो जाते हो | तब कहते हो की 'करते तो हैं लेकिन मिलता नहीं , तो क्या करें हमारा पार्ट ही ऐसा है' यह दिल शिकस्त और अल्बेलेपन के और फल न देने के संकल्प हैं |"(6)

यह बात हमारे लौकिक कार्य व्यवहार पर भी लागू होती है | हम अपनी वर्तमान समस्याओं के लिए भी यही दृष्टिकोण रखते हैं | उदाहरण के लिए भारत में स्वच्छता अभियान की बात हो , भ्रष्टाचार मिटाना हो , साम्प्रदायिकता ख़त्म करनी हो , नशों से छुटकारा पाना हो, बलात्कार, अपराधों और हिंसा को रोकना हो तो इसी शब्दावली का प्रयोग किया जाता है - करना तो चाहिए, होना तो चाहिए , कर ही रहे हैं , हो ही जाएगा | लेकिन परिणाम वही ढाक के तीन पात वाला होता है | इस लिए अव्यक्त वाणियों के सवाल उस चाबी की तरह काम करते हैं जो हमारी बुद्धि का ताला खोलते हैं| इन सवालों के ही माध्यम से यह जवाब भी मिल जाता है कि किसी भी कार्य में सफलता का आधार दृढ़ संकल्प है | चाहे यह संसारिक समस्या हो चाहे आत्मिक उत्थान के लिए अपने स्वभाव संस्कार में परिवर्तन करना हो | दृढ़ संकल्प ही तीली है पुराने जीर्ण शीर्ण गले सड़े विकारी संस्कारों को परमात्मा की लगन की अग्नि में भस्म करने की|

"सभी संगमयुगी श्रेष्ठ आत्माएं इस समय चातक के समान हैं | जैसे सीप के लिए कहते हैं कि हर बूँद को स्वयं में समाने से मोती बना देती है ऐसे ही आप सभी भी जो ज्ञान के बोल व महावाक्य सुनते हो और धारण करते हो वह एक एक बोल क्या

बन जाता है? आप भी उसे मोती बना देते हो और यही एक एक बोल पदमपति बनाने वाला बन जाता है | एक एक बोल अमूल्य तब बनता है जब उसे धारण करते हो | जैसे चातक बूँद को धारण कर लेते हैं वैसे ही आप भी इस ज्ञान को सुन कर समा लेते हो | समाने का प्रत्यक्ष स्वरूप क्या दिखाई देता है ? ऐसे हर संकल्प, हर बोल, और हर कर्म पद्मों के जमा करने का आधार बन जाता है अर्थात् हर सेकेण्ड के बोल में वह आत्मा पद्मपति स्वरूप में दिखाई देती है | स्थूल धन का नशा और ख़ुशी चेहरे पर चमकती हुई दिखाई देती है लेकिन होती वह अल्पकाल की ही है परन्तु ज्ञानचातक के चेहरे पर ख़ुशी की झलक सदा स्पष्ट दिखाई देती है | अपने दर्पण में तीसरे नेत्र के द्वारा अपनी झलक को हर समय देखते हो ? हर सेकेण्ड के जमा का हिसाब चेक करते हो ? प्लस कितना होता है और माइनस कितना होता है - ऐसा अपना स्पष्ट हिसाब रखने के अभ्यासी बने हो ? विशेष समय निकालकर हिसाब किताब रखते हो ?" (7)

इसी वाणी में आगे लिखा है, " हिसाब किताब आता है न ? मास्टर नालेजफुल हो न ? पुराने खाते का कर्ज़ या तो व्यर्थ संकल्प विकल्प के रूप में होगा या कोई स्वभाव या संस्कार के रूप में होगा | इन बातों से चेक करो कि संकल्प एक है ? याद भी एक को करते हैं अथवा करना एक को चाहते हैं, होता दूसरा है | अपनी तरफ क्या खींचता है ? क्यों खींचता है ? बोझ है कोई जो अपनी तरफ़ खींचता है ? हल्की चीज़ कभी नीचे नहीं आएगी , वह चढ़ती कला में ही होगी| किसी भी प्रकार का बोझ कितना भी ऊपर करना चाहो तो वह ऊपर नहीं जाएगा बल्कि नीचे ही आएगा | ऐसे ही सारे दिन की मनसा, वाचा और कर्मणा में सम्पर्क और सेवा में इन बातों को चेक करो | सेवा में भी प्लान और प्रेक्टिकल में , संकल्प और कर्म में अंतर क्यों? उस अंतर का कारण सोचेंगे तो स्पष्ट दिखाई देगा कि कोई न कोई कमी होने के कारण प्लैन और प्रैक्टिकल में अंतर होता है | सर्व शक्तियों में से किसी विशेष शक्ति की कमी है | जैसे योद्धा मैदान में सर्व शस्त्रधारी नहीं बन जाते हैं तो समय पर किसी साधारण शस्त्र की भी आवश्यकता पड़ जाती है तो उन्हें साधारण शस्त्र की कमी भी बहुत नुकसान कर देती है |(8)

माया के अनेक प्रकार के चक्कर में अर्थात भौतिकता के भंवर में फंसे व्यक्तियों के सिर पर अनेक प्रकार के विघ्नों का बोझ होता है और बुद्धि हर बात में अनेक प्रकार के व्यर्थ के क्यों, क्या और कैसे के जो सवाल स्वयं के प्रति उठते हैं उसका उल्लेख अव्यक्त वाणी में इस प्रकार किया है :

"क्या मैं सफ्ल्तामूर्त बन सकता हूँ? मैं स्वयं के सम्पर्क में सफ्ल्ता प्राप्त कर समीप आत्मा बनूँगी ? मैं सर्व के स्वभाव संस्कार में चल सकूंगी ? सर्व को संतुष्ट कर

सकुंगी ? ऐसे अनेक प्रकार के क्वेश्चन स्वयं के प्रति भी होंगे और अन्य के प्रति भी होंगे, ‘ यह मेरे से ऐसे क्यों चलते ? मुझे विशेष सहयोग क्यों नहीं मिलता ? मेरा नाम , मेरा मान क्यों नहीं होता ?’ इसी प्रकार के अन्य के प्रति क्वेश्चन होंगे |” (9)

ऐसे ही सवाल आत्मा पूछती है परमात्मा से इनका स्वरूप मधुर उलाहने वाला है - “ जब बाप सर्व शक्तिवान है तो मेरी बुद्धि को क्यों नहीं पलटते ?’ ‘नज़र से निहाल करने वाले मेरी तरफ़ नज़र क्यों नहीं रखते? ‘ जबकि बाप (परमात्मा पिता) है तो जैसी भी हूँ, कैसी भी हूँ, उनकी ही हूँ , उनकी जिम्मेवारी है मुझे पार कराना |’ ‘जब दाता है तो मैं (आत्मा) जो चाहती हूँ वह क्यों नहीं देता ? त्रिकालदर्शी है मेरे तीनों कालों को जानता है तो मुझे स्वयं ही अपनी शक्ति से श्रेष्ठ पद क्यों नहीं दिलाता ?” (10)

यहाँ जो प्रश्न उठाए गए हैं वे आत्माओं के परमात्मा के आगे मीठी मीठी शिक़ायतों के रूप में सामने आए हैं |

निष्कर्ष :

अव्यक्त वाणियों में इस प्रश्नवाचक शैली का प्रयोग व्यक्ति को उसकी आंतरिक शक्तियों का बोध कराकर आत्मा को अपने निज स्वरूप में स्थित करके शक्ति से सम्पन्न करता है | ये सवाल स्वयं का आत्म परीक्षण करने के लिए ज्ञान का दर्पण प्रदान करते हैं | आत्मा पर पड़ी देह के अभिमान के विभिन्न रूपों की परतों को एक एक करके हटाते हैं और आत्मा की पवित्रता की चमक बढ़ जाती है | जिससे व्यक्ति का मनोबल इतना बढ़ जाता है कि व्यक्ति में कैसे भी बड़े से बड़े संकट का सामना करने की शक्ति आ जाती है | जब यही सवाल परमात्मा पिता के प्रति किए जाते हैं तो इनका स्वरूप मीठी मीठी शिकायतों का रूप धारण कर लेता है | प्रश्नवाचक सम्बोधन का यह प्रयोग विश्व की आत्माओं के विस्मृति के आवरण को हटा कर स्मृत स्वरूप बनाने के लिए है | वर्तमान समय विश्व शांति के लिए और विश्व को स्वर्णिम युग में परिवर्तन करने के लिए अव्यक्त वाणियों के इन प्रश्नों को स्वयं से ही बार बार पूछना अनिवर्य है | इस प्रश्नों के उत्तर में ही व्यक्ति और विश्व की सुख, शांति, आनंद, प्रेम और ख़ुशी निर्भर है |

सन्दर्भ

1- अव्यक्त बापदादा, अव्यक्त वाणी, 2 -7 -75 , माउंट आबू : ब्रह्मा कुमरीज़, अव्यक्त वाणी 1975-76

2- अव्यक्त बापदादा, अव्यक्त वाणी, 9-1-75 , माउंट आबू : ब्रह्मा कुमरीज़, अव्यक्त वाणी 1975-76
3- वही
4- अव्यक्त बापदादा, अव्यक्त वाणी, 8-12-75 , माउंट आबू : ब्रह्मा कुमरीज़, अव्यक्त वाणी 1975 - 76
5- वही
6- अव्यक्त बापदादा, अव्यक्त वाणी, 1-2-75 , माउंट आबू : ब्रह्मा कुमरीज़, अव्यक्त वाणी 1975 - 76
7- अव्यक्त बापदादा, अव्यक्त वाणी, 4-2-75 , माउंट आबू : ब्रह्मा कुमरीज़, अव्यक्त वाणी 1975 - 76
8- वही
9- अव्यक्त बापदादा, अव्यक्त वाणी, 18-9-75 , माउंट आबू : ब्रह्मा कुमरीज़, अव्यक्त वाणी 1975 - 76
10- वही